इकाई 6 वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष का अन्त:सम्बन्ध

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6 . 2 ज्योतिष और वास्तु का अन्त : सम्बन्ध

6.2.1 गृहरम्भ में ज्योतिष के अनुसार राशि एवं मास फल

6.2.2 ग्रामवास में ज्योतिष और वास्तु के अनुसार निवास विचार

6.2.3 मण्डलेश फल एवं मुख्यद्वार विचार

6.2.4 गृह प्रवेश में लग्नफल तथा कलश चक्र विचार

6.3 वास्तु से ज्योतिष गणित का सम्बन्ध

6.3.1 क्षेत्रफल, आय ,नक्षत्र, नक्षत्रगण, नक्षत्र दिशा सम्बन्ध

6.3.2 नक्षत्र वैर, व्यय, तारा, नाड़ी, राशि राशिस्वामी सम्बन्ध

6.3.3 गृह का नामाद्याक्षर, अंशक, लग्न, तिथि, वार, करन, योग सम्बन्ध

6.3.4 वर्ग एवं तत्त्व वास्तु में ज्योतिषीय विचार

6.4 सारांश

6.5 शब्दावली

6.6 उपयोगी पुस्तकें

6.7 बोध प्रश्न

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:

- ज्योतिष और वास्तु का अन्त: सम्बन्ध समझेंगे और बतायेंगे।
- गृहारम्भ में राशि एवं मास फल को बतायेंगे।
- ग्रामवास विचार ज्योतिष के अनुसार करेंगे।
- गृह आयु विचार, एवं मुख्यद्वार कथन राशि –लग्न के अनुसार करेंगे।
- गृह प्रवेश में लग्नफल एवं कलश चक्र विचार करके बतायेंगे।
- वास्तु से गणित ज्योतिष के अन्त : सम्बन्ध को भी बतायेंगे।
- क्षेत्रफल दिशा इत्यादि के बारे में भी बतायेंगे।

- नक्षत्र वैर भवन राशि स्वामी विचार भी करेंगे।
- गृह नाम का प्रथम अक्षर ,तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करन आदि को बतायेंगे।
- ज्योतिष के वर्ग और तत्व का विचार भी वास्तु में कर पायेंगे ।

6.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई संस्कृत विभाग, मानविकी विद्यापीठ, इन्दिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में संचालित वास्तुशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम के अंतर्गत, वास्तुशास्त्र के स्वरूप एवं इतिहास नामक पाठ्यक्रम की खण्ड 1 "वास्तुशास्त्र का स्वरूप" नामक उपशीर्षक के अंतर्गत यह छठवीं इकाई है । इस इकाई का नाम है "वास्तुशास्त्र एवं ज्योतिष का अन्त:सम्बन्ध" ज्योतिष और वास्तु का अन्त : सम्बन्ध बहुत पुराना है आज भी वास्तुशास्त्र में भवन निर्माण के अंतर्गत पूर्वदिशा को सर्वाधिक महत्व दिया गया है, चूँकि दिशाओं का ज्ञान ज्योतिष के अनुसार ही किया जाता है। एवं सूर्य की किरन भवन के अन्दर अधिक मात्रा में आने से भवन निवासी का स्वास्थ्य उत्तम होता है एवं मानसिक दृष्टी कोण से भी सफलता प्राप्त करता है।अत: हम कह सकते हैं कि वास्तु और ज्योतिष एक सिक्के के दो पहलू हैं, जैसे किसी जातक के जन्म कुण्डली के विश्लेषण में उसके भवन या घर वास्तु सहायक हो सकता है उसी प्रकार किसी के घर के विश्लेषण में भी उसकी जन्मकुंडली सहायक हो सकती है। वास्तुशास्त्र एक विलक्षण शास्त्र है इसमें इक्यासी पदों में पैतालीस देवतओं का समावेश है और विदिशा समेत आठ दिशाओं को जोडकर तिरपन देवता होते हैं। इसी प्रकार, जन्मकुडली में बारह भाव और नव ग्रह होते हैं, बिना ज्योतिष ज्ञान के वास्तु का प्रयोग अधुरा है। इसलिए वास्तुशास्त्र का उपयोग करने से पूर्व ज्योतिष को भी ध्यान रखना अति आवश्यक है, वास्तु में ज्योतिष का विशेष स्थान इसलिए है क्योंकि ज्योतिष के अभाव में ग्रहों के प्रकोप से हम नहीं बच सकते, हमारे ऊपर ग्रहों की स्थिति क्या है, हमें उनके कुप्रभावों से बचने के लिए क्या उपाय करने चाहिए, हमारा पहनावा, आभूषण, घर की दीवारें, वाहन दरवाजे आदि का आकार और रंग कैसा होना चाहिए, इसका ज्ञान हमें ज्योतिष तथा वास्तु के द्वारा ही हो सकता है, वास्तु का आशय केवल घर से ही नहीं बल्कि मनुष्य की सम्पूर्ण जीवनशैली से है । हमें कैसे रहना चाहिए, किस दिशा में शिर करके सोना चाहिए किस दिशा में बैठकर भोजन करना करना चहिए इत्यादि बहुत से प्रश्नों के ज्ञान की अनुभूति होती है। अगर यदि कोई परेशानी हो तो उस समस्या का निराकरण भी वास्तु और ज्योतिष के संयोग से आसानी से किया जा सकता है। प्रस्तुत पाठ में विभिन्न पहलुओं से वास्तु और ज्योतिष का अन्त : सम्बन्ध बताया गया है मुझे आशा है कि आपलोगों को पसन्द आएगा तथा इसके अनुसार आप अन्य लोगों को भी बतायेंगे।

6.2 ज्योतिष और वास्तु का अन्त: सम्बन्ध

इस बात का सबसे बड़ा जीवन्त उदाहरण आप को इससे समझना चाहिए कि जो भी ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थ हैं उनमें वास्तु की चर्चा की गयी है – मुहूर्तचिंतामणि में भी वास्तु प्रकरण है, वृहत्संहिता, वस्तुमाला, वास्तु प्रवन्ध, गृहभूषण, वास्तुप्रवन्ध, मुहूर्तमार्तण्ड, मुहूर्तगणपति, आदि ग्रन्थों में वास्तु की चर्चा की गयी है । इससे साबित हो रहा है कि वास्तुशास्त्र और ज्योतिष का अन्त : सम्बन्ध चिरकाल से ही चली आ रही है, और भी विशेष बात यह है कि

घर आदि के आरम्भ में वृषवास्तु चक्र का विचार किया जाता है जोकि यह चक्र ज्योतिष में सूर्य के राशि पर आधारित है लेकिन इसका उपयोग वास्तु में किया जाता है, ग्राम आदि वास में राशियों के अनुसार ग्राम में अलग – अलग दिशाओं तथा स्थानों में निवास करने का निर्देश किया गया है वस्तुतः किसी भी भूखण्ड या वास्तु में 9 ग्रहों का स्वामित्व होता है जो कि अलग –अलग दिशाओं एवं कोणों के अनुसार आधारित होता है। हर एक स्थान के देवता भिन्न – भिन्न होते हैं। तथा गृह निर्माण कार्य वास्तु नियमानुसार होने से सुख की वृद्धि होती है तथा इनके विपरीत होने पर अशुभ फल की प्राप्ति होती है, एवं वास्तु दोष भी लगता है जिसके फलस्वरूप अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है इसलिए इस बात को जानना आवश्यक है कि ज्योतिष से सम्बन्धित इन 9 ग्रहों का भवन पर किस प्रकार का प्रभाव होता है त्तथा इनका सम्बन्ध क्या है। वास्तुशास्त्र में पूर्व दिशा के स्वामी ग्रह सूर्य है तथा इस दिशा के देवता इन्द्र हैं, अगर यदि इस दिशा का वास्तु निर्माण कार्य निर्दोष हो तो उस भवन के निवासी उत्तम गुणों से युक्त और स्वस्थ होंगे इस स्थिति में गृह स्वामी को मान –सम्मान की प्राप्ति होगी, चूँकि पूर्व दिशा को वास्तु के अनुसार खुला रखने का नियम है, ताकि शुद्ध एवं प्रसस्थ गुणों से युक्त सूर्य की किरणे घर में प्रवेश करने से भवन में स्वस्थ वातावरण का संचार होता रहे तथा इस दिशा में अधिक निर्माण न करने की सलाह दी जाती है एवं इस दिशा को खुला रखना चाहिए।

इस बात को निम्लिखित चक्र के अनुसार समझ सकते हैं।

पूर्व

	दिशा – ईशान ग्रह – बृहस्पति देवता –शिव तत्व – जल	दिशा – पूर्व ग्रह - सूर्य देव –इन्द्र	दिशा – आग्नेय ग्रह - शुक्र देव – अग्निदेव तत्व – अग्नि	
उत्तर	दिशा – उत्तर ग्रह – बुध देवता –कुबेर	दिशा – मध्य ब्रह्म तत्व – आकाश	दिशा – दक्षिण ग्रह – मंगल देव - यमराज	दक्षिण
	दिशा – वायव्य ग्रह – चन्द्रमा देवता – वायु तत्व – वायु	दिशा – पश्चिम ग्रह - शनि देवता - वरुण	दिशा – नैऋत्य ग्रह - राहु देव – निऋती (राक्षस) तत्व – पृथ्वी	
		दक्षिण		

आग्नेय कोण के स्वामी ग्रह शुक्र है तथा इस दिशा के देवता अग्निदेव है चूँकि शुक्र ग्रह एश्वर्य के अधिपति भी हैं अत:जिस घर में आग्नेय कोण की स्थिति शुभ हो या वास्तु के अनुकूल निर्माण किया गया हो तो भवन स्वामी के लिए स्वास्थ्य उत्तम होगा एवं सम्पदा से परिपूर्ण होगा साथ ही इस दिशा में भोजनालय तथा विद्युत बोर्ड इत्यादि होना वास्तु के अनुरूप माना गया है। दक्षिण दिशा के स्वामी ग्रह मंगल हैं तथा इस दिशा के स्वामी देवता यम हैं चूँकि मंगल

सेनापति है, तथा युद्ध, झगड़ा, क्रोध इत्यादि का भी संचालन करते हैं, दक्षिण दिशा विधि, न्याय, मुकदमेबाजी, आराम जीवन और मृत्यु से सम्बन्धित भी है फलत: इस दिशा में शयन कक्ष तथा भण्डार गृह रखना चाहिए। दक्षिण पश्चिम दिशा या नैऋत्य कोण के स्वामी राहु ग्रह हैं इस दिशा में तामसी तत्व सबसे अधिक होता है इसलिए वास्तुशास्त्र में इस दिशा को सबसे अधिक निर्माण करके भारी रखना शुभ बताया गया है। गृह में भूलकर भी इस दिशा को खुला नहीं रखना चाहिए, इस दिशा में बैडरूम, आफिस बाथरूम या स्टोर रूम बनवाना उत्तम होता है। पश्चिम दिशा के स्वामी ग्रह शनि होते हैं तथा देवता वरुण है, शनि ग्रह नौकरी प्रदाता ग्रह भी कहे जाते हैं तथा भाग्य, कर्म, यश, एवं पौरुष पर भी इनका स्वमित्व है साथ ही पश्चिम दिशा भी लाभ एवं प्रसन्नता की दिशा है। इस दिशा को हमेशा साफ –सुथरा रखना चाहिए इस दिशा में ड्राइंगरूम, वेडरूम, एवं पुस्तकालय होना शुभ माना गया है।वायव्य कोण का स्वामी ग्रह चन्द्रमा हैं एवं इस दिशा के देवता वायुदेव हैं, चन्द्रमा शान्त चित्त एवं भाग्योदय के प्रतीक हैं साथ ही यह मन, चित्तवृति ,शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, सम्पत्ति एवं माता के कारक भी है, चूँकि सामाजिक जीवन एवं व्यापार मनुष्य का मूल आधार है अत: इस दिशा में भोजन कक्ष, अतिथिकक्ष, विवाह योग्य कन्याओं का कमरा एवं बिना टायलेट का बाथरूम बनवाना शुभ होता है।उत्तर दिशा के स्वामी ग्रह बुध है तथा इस दिशा के देवता कुवेर देव हैं बुध वाणी के कारक एवं विद्वत्ता के प्रतीक हैं, जिस गृह में उत्तर दिशा शुभ होती है वह के लोग अत्यन्त बुद्धिमान, विद्वान, लेखन एवं कविता में रूचि रखने वाले अध्यापक इत्यादि बनकर सेवा करते हैं इसलिए इस दिशा में वास्तु के अनुसार अध्ययन कक्ष, तिजोरी और पुस्तकालय बनवाना शुभ होता है। ईशान कोण के स्वामी ग्रह बृहस्पति हैं एवं भगवान विष्णु इस दिशा के देवता हैं इस दिशा पूजन गृह एवं योग कक्ष का निर्माण करना शुभ फल का द्योतक है इश्वर की कृपा बनी रहती है तथा व्यक्ति को प्रसिद्धि प्राप्त होता है इस प्रकार आप को वास्तुशास्त्र तथा ज्योतिष का अन्त; सम्बन्ध समझना चाहिए।

6.2.1 गृहारम्भ में ज्योतिष के अनुसार राशि एवं मास फल

मुहूर्तचिंतामणि के अनुसार देवालय का आरम्भ करते समय राहू (नाग) का मुख मीन ,मेष और वृष का सूर्य हो तो ईशान कोण में, मिथुन ,कर्क, और सिंह राशि का सूर्य हो तो वायु कोण में, कन्या, तुला, और वृश्चिक का सूर्य हो तो नैऋत्य कोण में तथा धन ,मकर, और कुम्भ राशि के सूर्य हो तो अग्निकोण में रहता है।

घर का आरम्भ करते समय राहु का मुख सिंह, कन्या, और तुला राशि के सूर्य में ईशान कोण में, वृश्चिक ,धनु और मकर राशि के सूर्य में वायव्य कोण में ,कुम्भ मीन और मेष राशि के सूर्य में नैऋत्य कोण में तथा वृषभ मिथुन और कर्क राशि के सूर्य में अग्निकोण में रहता है।

तालाब आदि जलाशय का आरम्भ करते समय राहू का मुख मकर ,कुम्भ और मीन के सूर्य में ईशान कोण में, मेष ,वृष, और मिथुन के सूर्य में वायव्य कोण में ,कर्क ,सिंह और कन्या के सूर्य में नैऋत्य कोण में तथा तुला ,वृश्चिक, और धनु के सूर्य में अग्निकोण में रहता है।

मुख के पीछे भाग में खात करना चाहिए, मुख ईशान कोण में हो तो अग्निकोण में खात करना चाहिए, मुख वायव्य कोण में हो तो खात ईशान कोण में, मुख नैऋत्य कोण में हो तो खात वायव्य कोण में और मुख अग्नि कोण में हो तो खात नैऋत्य कोण में करना चाहिए। अन्यमतानुसार - विवाह आदि के समय जो वेदी बनाई जाती है उसके उसके प्रारम्भ में वृष

आदि, देवालय के आरम्भ में मीन आदि, घर के आरम्भ में सिंह आदि, जलाशय के आरम्भ में मकर आदि और किले के आरम्भ में कन्या आदि तीन – तीन संक्रांतियों में राहू का मुख ईशान आदि कोण में विलोम क्रम से रहता है। घर आदि के आरम्भ में वृषवास्तुचक्र कहलाता है, घर और प्रसाद आदि के आरम्भ में यह वृषवास्तु चक्र देखा जाता है सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से चन्द्रमा के दिन नक्षत्र तक गिनें। इसमें प्रथम तीन नक्षत्र वृषभ के मस्तक पर समझें। इन नक्षत्रों में घर आदि का आरम्भ किया जाय तो अग्नि का भय होता है, चार से सात नक्षत्र में अगले पैर पर समझना चाहिए, इन नक्षत्रों में घर बनाना आरम्भ किया जाय तो घर शुन्य रहता है अर्थात उसमे कोई निवास नहीं करता, आठ से ग्यारह नक्षत्र पीछे के पैरों पर समझें, इन नक्षत्रों में गृहरम्भ करने से गृहस्वामी का वास स्थिर रहता है। 12 वें से 14 नक्षत्र पीठ पर समझें, इन नक्षत्रों में गृह का आरम्भ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।15 से 18 नक्षत्र दाहिनी कोख में समझें जिसमें गृहारम्भ करने से अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। 19 से 21 नक्षत्र पूंछ पर समझें इसमें गृहारम्भ करने से स्वामी का नाश होता है, 22 से 25 नक्षत्र बाई कोख पर समझें इस समय गृहारम्भ करने से गृहस्वामी दरिद्र होता है। 26 से 28 नक्षत्र का स्थान मुख पर समझना चाहिए जिसमें गृहारम्भ करने से निरन्तर कष्ट बना रहता है। इस प्रकार से देखें तो सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ है, आठ से अट्ठारह नक्षत्र शुभ हैं, उन्नीस से अट्ठाईस नक्षत्र अशुभ हैं।

राशि फल – धनु, मीन, मिथुन, और कन्या इन चार राशियों में जब सूर्य स्थित हों तब कभी भी गृह निर्माण का कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए। तुला, वृश्चिक, मेष और वृष इन चार राशियों में सूर्य हो तो कभी भी पश्चिम दिशा के द्वार वाला घर न बनावें लेकिन दक्षिण अथवा उत्तर दिशा द्वार वाले घर का निर्माण आरम्भ किया जा सकता है। कर्क, सिंह ,मकर और कुम्भ इन चार राशियों में जब सूर्य हो तो दक्षिण और उत्तर दिशा द्वार वाला घर नहीं बनाना चाहिए, परन्तु पूर्व अथवा पश्चिम दिशा के द्वार वाले घर के निर्माण का कार्य आरम्भ कर देना चाहिए। मुहूर्त चिंतामणि के अनुसार जब कर्क, मकर सिंह और कुम्भ राशि का सूर्य हो तब पूर्व या पश्चिम दिशा के द्वार वाले घर का निर्माण किया जा सकता है। तुला, मेष, वृष, और वृश्चिक राशि के सूर्य हो तो दक्षिण अथवा उत्तर दिशा के द्वार वाले घर का आरम्भ किया जाता है। इसके विपरीत करने से अथवा मीन ,धनु, मिथुन, और कन्या राशि के सूर्य में गृह निर्माण करने से व्याधि और शोक होते हैं तथा धन का नाश होता है।

मास फल – गृह निर्माण कार्य अगर चैत्र मास में किया जाय तो शोक, वैशाख में किया जाय तो धन प्राप्ति, ज्येष्ठ मास में किया जाय तो मृत्यु कारक, आषाढ़ में किया जाय तो हानि और श्रावण में किया जाय तो धनप्राप्ति होती है, भाद्रपद में निर्माण करने से घर शुन्य रहता है। आश्विन में गृहारम्भ करने से क्लेश, कार्तिक में आरम्भ करने से घर वीरान रहता है, मार्गशीर्ष में करने से सम्मान प्राप्त होता है, पौष में करने से सम्पत्ति प्राप्त होती है। माघ में अग्निभय तथा फाल्गुन में आरम्भ करने से सुख की प्राप्ति होती है। अन्य मतानुसार वैशाख, मार्गशीर्ष, सावन, फल्गुन और मतान्तर से पौष इन महीनों में शुक्ल पक्ष में शुभ दिन देखकर निर्माण कार्य किया जाय तो सुख – सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। परन्तु ये सभी विचार पत्थर, ईट, के मकान बनाने में करना चाहिए, घास और लकड़ी के मकान बनाने में ए सभी विचार नहीं किए जाते हैं इसी प्रकार नक्षत्र और तिथि फल भी बताये गये हैं। मित्रों ज्योतिष और वास्तु का इतना घनिष्ट सम्बन्ध आप को इस प्रकार समझना चाहिए कि शुभ लग्न और चन्द्रमा की प्रबलता को देखकर अधोमुख संज्ञक नक्षत्र में खात मुहूर्त करना चाहिए तथा शुभ लग्न एवं चन्द्रमा बलवान

हो तो उर्ध्वमुख संज्ञक नक्षत्र में शिला का स्थापना करके मकान बनाना चाहिए ऐसा निर्देश किया है।

6.2.2 ग्रामवास में ज्योतिष और वास्तु के अनुसार निवास विचार

जिस प्रकार वास्तुशास्त्र में सर्वप्रथम घर बनाने में द्वारशुद्धि इत्यादि का विचार करते हैं तो उसमें वृष वास्तु चक्र के अनुसार नक्षत्र शुद्धि इत्यादि का विचार देखा जाता है जैसा कि पूर्व में कहा भी गया है तथा उसी क्रम में लग्न शुद्धि भी देखी जाती है आशय यह है कि हर एक जगह वास्तु में ज्योतिष का अन्त: सम्बन्ध है।

ग्रामवास में भी सर्वप्रथम नक्षत्र से ही आरम्भ होता है ग्राम के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक नराकृति चक्र का विचार किया जाता है। नक्षत्रों की गणना मनुष्य के सिर से किया जाता है तथा हर एक अंग पर नक्षत्रों को बैठाया जाता है तथा उसका फल अलग –अलग होता है। ज्योतिष के अनुसार ही वास्तुशास्त्र में वर्ग के ज्ञान का फल बताया गया है ,ये आठ वर्ग निम्नलिखित है – अ, क, च, ट, त, प, य, श तथा इन वर्गो के स्वामी गरुड़, विडाल, सिंह, स्वान, सर्प, मूषक, मृग और मेष हैं। तथा अपने से पाचवां शत्रु होता है, इस तरह ग्रामवास में वर्ग विचार किया जाता

है। ठीक इसी प्रकार ग्रह मेलापक भी विचार किया जाता है अत: हम यह कह सकते हैं कि वास्तु और ज्योतिष का अन्त:सम्बन्ध बहुत ही सारगर्भित है। इसी प्रकार काकिणी का विचार भी विचार किया जाता है, जो कि ग्रह मत्री, वस्तु खरीदने –वेचने में, ग्रामादिवास में तथा इससे भी सम्बन्ध प्रदर्शित होता है। वृहद्वास्तुमाला में भी राशियों के अनुसार ग्रामवास का विचार किया गया है, जिसमें वृष, मिथुन, सिंह, मकर राशि के लोगों को गांव के मध्य में तथा पूर्व, अग्नेय, दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम ,वायव्य ,उत्तर ईशान से क्रमशः वृश्चिक, मीन, कन्या, कर्क, धनु, तुला, मेष, कुम्भ राशि वालों को निवास नहीं करना चाहिए, तथा अकारादि वर्ग उपर्युक्त दिशाओं में क्रमशः बलवान होते हैं। जैसे – अवर्ग नाम वाले मानवों को पश्चिम दिशा में निवास करना चाहिए या पश्चिमाभिमुखी द्वार रखना चाहिए।

वास्तुशास्त्र में दिग्दशा के अनुसार ग्रह एवं उनके वर्षादि का निर्णय निर्णय होता है वह भी ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्धित है। दिग्दशा जानने के लिए नियम यह है कि गृहस्वामी के नाम वर्ग, दिशा वर्ग, ग्राम वर्ग के अंकों को जोड़ने से जो योगफल आवे उसमें 9 का भाग देने से जो शेष बचे उसके अनुसार दशाफल समझना चाहिए। इसमें मुख्य बात यह है कि शुभ ग्रहों की दशा में शुभ फल प्राप्त होता है तथा अशुभ ग्रहों की दशा में अशुभ फल मिलता

है। जैसे- सूर्य की दशा में गृह सम्बन्धित कार्य करने से उद्वेग होता है ,चन्द्रमा की दशा धन युक्त बनाती है। मंगल की दशा भय दायक होती है,राहु दशा काल ज्वर पीड़ा देने वाली होती है, गुरु में सुख –सम्पदा की प्राप्ति होती है, शनि में रोग होता है, बुध में सुख, केतु में दुःख, शुक्र में आनन्द की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार मुहूर्त ज्योतिष के बिना वास्तुशास्त्र अधुरा है, जिस प्रकार ज्योतिष शास्त्र में विवाह मेलापक का विचार है उसी प्रकार वास्तुशास्त्र में देश ,ग्राम, गृह ज्वर, व्यवहार, द्युत आदि में काकणी विचार वर्ग शुद्धि आदि मेलापक राशि नाम से करने का ही विचार है। वास्तुशास्त्र में पिण्ड आदि द्रव्यों का आनयन दोनों में समान रूप से होता है, साथ ही ऋण – लाभ नक्षत्रानयन ,नक्षत्र शुद्धि विचार के उपरान्त गृहारम्भ व गृह प्रवेश कालिक ग्रहों के स्थिति अनुसार फल होता है। इससे स्पष्ट होता है कि ज्योतिष और वास्तु का

अन्त: सम्बन्ध है और भी विशेष बात यह है कि ज्योतिष में जब हम कुण्डली देखते हैं तो उसमें चतुर्थ भाव से भूमि – भवन इत्यादि का विचार किया जाता है तथा इस भाव की ग्रह स्थिति के अनुसार यह पता लगाया जा सकता है कि मुझे किस प्रकार की वास्तु प्राप्त होगी तथा इसमें क्या सावधानियां बरतनी चाहिए, इसी प्रकार वास्तु से भी इस बात का पता लगाया जा सकता है कि इस वास्तु में निवास का मुझे क्या फल होगा अत: इससे भी स्पष्ट होता है कि ज्योतिष और वास्तु का अन्त: सम्बन्ध बहुत ही सारगर्भित है।

6.2.3 मण्डलेश फल एवं मुख्यद्वार विचार

चूँकि भवन निर्माण से पूर्व भूमि चयन से लेकर गृह प्रवेश तक विधिवत विचार किया जाता है भूमि चयन से पूर्व जिस ग्राम नगर आदि में भूमि लेना हो उसके साथ गृह स्वामी को ज्योतिषीय अनुकूलता आवश्यक मानी गयी है। इसके लिए वर्ग मैत्री काकिणी, वर्ग एवं राशि के अनुसार ग्राम या नगर की दिशा एवं दशा विचार, वर्णानुसार भूमि चयन, चयनित भूमि के निकट वृक्ष एवं कुपादि का विचार किया जाता है। मण्डलेश बनाने की प्रक्रिया ज्योतिष से सम्बन्धित है परन्तु इसका प्रयोग वास्तु में यहां पर किया गया है – यहां पर आप को मण्डलेश का आशय उस भूभाग से समझना चाहिए जहां पर आप भवन निर्माण कर रहे हैं। मण्डलेश आनयन की विधि यह है कि – गृहस्वामी के हाथ से जिस भूमि पा घर बनवाना है उसकी लम्बाई –चौड़ाई नाप लेकर दोनों को आपस में गुना करें फिर जो अंक आवे उसमें 2 से गुणा करें और उस गुणनफल में 8 का भाग दें तथा शेषफल के अनुसार मण्डलेश को समझें। 1 शेष बचे तो इन्द्र, 2 में विष्णु ,3 में यम, 4 में वायु, 5 में कुबेर, 6 में शिव, 7 में ब्रह्मा, 8 में गणेश, मण्डलेश होते हैं, इनका फल आप को निम्नलिखित चक्र से समझना चाहिए। मण्डलेश फल चक्र –

शेष संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8
मण्डलेश	इन्द्र	विष्णु	यम	वायु	कुबेर	शिव	ब्रम्हा	गणेश
फल	सौख्य	यश	दुःख	उत्पादक	धनलाभ	कलह	सुखलाभ	सर्वसिद्धि

मित्रों भू स्वामी के हाथ से लम्बाई – चौड़ाई की नाप को आपस में गुणा करके 9 से भाग देकर जो शेष आवे उसके अनुसार भी यह समझा जा सकता है कि यहाँ निवास करने पर क्या फल होगा – जैसे – 1 शेष बचे तो वहां पर निवास करने वाला दानी होगा, 2 शेष बचे तो बुद्धिमान होगा, 3 शेष बचे तो भीरु होगा, 4 शेष बचे तो वहां निवास करने वाले के साथ कलह होगा, 5 शेष बचे तो राजा के समान होगा, 6 शेष बचे तो दानवी प्रवृति का होगा, 7 शेष बचे तो उसमें नपुंसकता आयेगी, 8 शेष बचे तो वह गृह वासी धनी होगा ऐसा जानना चाहिए।

द्वार विचार – अब तो आप को पूर्णतया ज्ञात हो गया होगा कि वास्तु और ज्योतिष का अन्त:सम्बन्ध बहुत ही महत्वपूर्ण क्योंकि द्वार के निर्णय में भी दोनों के अनुसार बताया गया है।इसलिए सर्व प्रथम राशियों वर्ण को जानना आवश्यक है, कर्क –वृश्चिक –मीन राशियों का ब्राह्मण वर्ण है, मेष – सिंह –धनु इन राशियों का वर्ण क्षत्रिय है, वृष –कन्या– मकर राशियों का वर्ण वैश्य है, तथा मिथुन – कुम्भ एवं तुला शुद्र वर्ण की राशियां हैं। इस प्रकार ब्राह्मण वर्ण राशि वालों के लिए अपने गृह का द्वार पूर्व दिशा में रखना चाहिए। क्षत्रिय वर्ण राशि वाले को उत्तर गृह द्वार बनाना चाहिए, वैश्य वर्ण राशि वालों को दक्षिण द्वार, एवं शुद्र वर्ण राशि वालों को पश्चिमाभिमुख द्वार बनाने क विधान है। मार्तण्ड के अनुसार – घर के दीर्घ – विस्तार के योग में 9 का भाग देकर अगर यदि पूर्व की ओर द्वार बनाना हो तो बायीं ओर से दो हिस्सा

भूमि छोड़कर तीसरे या चौथे अंश में, दक्षिणाभिमुख द्वार बनाना हो तो चौथे – पाचवें भाग में, और उत्तराभिमुख द्वार करना हो तो चौथे – पाचवें भाग में ही द्वार निर्माण करना चाहिए। अन्यमतानुसार – घर के जिस भाग में द्वार बनाना हो उस भाग की लम्बाई –चौड़ाई को जोड़कर उसमें 9 का भाग देना चाहिए। उसमें 5 भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर की ओर छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। मकान का दक्षिण- वाम भाग का विचार घर से बाहर निकलते समय का समझें।इस प्रकार आपको वास्तु एवं ज्योतिष का सम्बन्ध समझना चाहिए।

6.2.4 गृह प्रवेश में लग्न फल तथा कलश चक्र विचार

आप को इस बात को जानना आवश्यक है कि पुराने समय में राजा लोग जब यात्रा करके आते थे उस समय भी गृह प्रवेश होता था, लेकिन वर्तमान समय में गृहस्वामी अपने भवन निर्माण पूर्ण हो जाने पर गृह प्रवेश करते हैं।इसमें निम्नलिखित विषयों को ध्यान रखना चाहिए – उत्तरायण सूर्य के रहने पर ज्येष्ठ, माघ, फल्गुन एवं वैशाख मास में द्वार की दिशा में स्थित नक्षत्र, मृदु एवं ध्रुव नक्षत्रों में, जन्म राशि या लग्न से उपचय (3, 6, 10, 11) राशि स्थिर लग्न में, राजा को यात्रा से आने पर एवं नवीन गृह में प्रवेश करना चाहिए।

जन्मलग्न की पहली राशि में गृह प्रवेश करने पर आरोग्य, दूसरी में दरिद्रता, तीसरी में सम्पदा, चौथी में वन्धुघात, पाचवीं में पुत्र –नाश, छठीं में पुत्र –नाश, सातवीं में पत्नी –नाश, आठवीं में गृहस्वामी के प्राणों का नाश, नवीं में कलह, दसवीं में सिद्धि, ग्यारहवीं में अर्थलाभ, एवं बारहवीं में भय प्रदान करनेवाला होता है।

गृह कर्ता के जन्मलग्न एवं जन्मराशि गृह प्रवेश काल में प्रवेश लग्न गत हो तो गृह – प्रवेश शुभ होता है, ऐसा मत शौनक आदि ऋशियों का है।

(1, 8, 5, 2, 11,) वें भाव में सूर्य के रहने पर पूर्व आदि दिशा के गृह में प्रवेश करने के लिए सूर्य वाम कहे जाते हैं)।

सूर्य के वाम होने पर पूर्वादि मुख वाले गृहों में प्रवेश का फल मृत्यु, सुत, अर्थ एवं लाभ होता है। पूर्व द्वार वाले गृह में पूर्ण तिथि, दक्षिण में नंदा तिथि, पश्चिम में भद्रा एवं उत्तर में जया तिथि में प्रवेश करना चाहिए।

विशाखा नक्षत्र में गृह प्रवेश करने पर स्त्री नाश, कृतिका नक्षत्र में प्रवेश करने पर गृह का नाश, आर्द्रा, श्लेषा, ज्येष्टा, अथवा मूल नक्षत्र में प्रवेश करने पर पुत्र का विनाश, भरणी, तीनों पूर्वा अथवा मघा में प्रवेश करने पर गृहस्वामी का नाश होता है।

मेष, कर्क, मकर, एवं तुला लग्न में, चैत्र मास में, रिक्ता तिथि (4, 9, 14,) मंगलवार, रात्रि एवं अधिक मास में गृह प्रवेश प्रशस्त नहीं होता है।

कलश चक्र – गृह प्रवेश के समय सूर्य संक्रांति जिस नक्षत्र में हो उस नक्षत्र को कलश के मुख पर रखना चाहिए।उस नक्षत्र में गृह प्रवेश करने पर अग्निदाह होता है, इसके बाद उस चार नक्षत्र से आगे के चार नक्षत्र कलश के पूर्व भाग में रखें जाते हैं। उन नक्षत्रों में गृह प्रवेश करने पर गृह स्वामी का अपने गृह से उद्वास होता है। इसके आगे चार नक्षत्र कलश के दक्षिण भाग में रखें जाते हैं। उनमें गृह प्रवेश करने पर गृहस्वामी को लाभ होता है। आगे के चार नक्षत्र पश्चिम भाग में होते हैं, इनमें गृह प्रवेश से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। आगे चार नक्षत्र उत्तर भाग में रखे

जाते हैं, जिनमें गृह प्रवेश से कलह होता है। अगले चार नक्षत्र कलश के गर्भ में, पुन: तीन नक्षत्र गुद में, एवं तीन नक्षत्र कंठ में, स्थापित करना चाहिए । गर्भस्थ नक्षत्रों में गृह प्रवेश करने पर विनाश, गुदस्थ नक्षत्रों में स्थिरता एवं कंठस्थ नक्षत्रों में भी स्थिरता की प्राप्ति होती है।

अन्य मतानुसार सूर्य के नक्षत्र से चन्द्र पर्यन्त नक्षत्रों में 3 नक्षत्र सूर्य के, 3 बुध के, 3 शुक्र के, 3 शनि के, एवं 3 चन्द्रमा के नक्षत्र होते हैं।पुनः 3 नक्षत्र मंगल, 3 वृहस्पति, 3 राहु, एवं 3 केतु के नक्षत्र होतेहैं इनमें गृह प्रवेश नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार ज्योतिष और वास्तु का अन्त; सम्बन्ध आप इससे समझ सकते हैं कि गृहप्रवेश में हवन चक्र का विचार किया जाता है वह भी ज्योतिष के अनुसार ही होता है।इसका नियम यह है कि शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्राप्त तिथि संख्या में 1 जोडकर उसमें रविवार से वर्तमान वार की संख्या जोड़ दे एवं उसमें 4 का भाग दें। शेष 3 (एवं 0) शेष होने पर भूमि पर अग्निवास होता है। उस दिन होम शान्ति करने से सुख और शान्ति मिलती है। 1 शेष होने पर आकाश में, 2 शेष होने पर पाताल में अग्नि का वास होता है, इसमें होम करने पर प्राण एवं धन की हानि होती है। इस प्रकार आप ने समझा कि ज्योतिष और वास्तु एक दुसरे के पूरक हैं।

6.3 वास्तु से ज्योतिष गणित का सम्बन्ध

इस वर्ण्य विषय से आपको यह समझना चाहिए की वास्तु में जो भी आनयन की प्रक्रिया है वह सभी गणितज्योतिष पर आधारित है जैसे – देवताओं का घर अर्थात देवालय, भवन या गृह निर्माण करने से पूर्व निम्नलिखित अंगों का शुभाशुभ फल का आंकलन अवश्य ही कर लेना चाहिए तथा इसी को वास्तु में ज्योतिष का अन्त: सम्बन्ध भी समझना चाहिए। इन अंगों के नाम इस प्रकार है – 1 . क्षेत्रफल 2. आय 3. नक्षत्र 4. नक्षत्रगण 5. नक्षत्र दिशा 6. नक्षत्र वैर 7. व्यय 8. तारा 9. नाड़ी 10. राशि 11. राशि स्वामी 12. गृहनामाद्यक्षर 13. लग्न 15 . तिथि 16. वार 17. करन 18. योग 19. वर्ग 20. तत्व 21. आयु इस बात को उदाहरण के अनुसार इस प्रकार समझना चाहिए – यदि पांच हाथ पांच अंगुल लम्बा और इतना ही चौड़ा तथा 6 हाथ 1 अंगुल ऊँचा कोई वास्तु निर्मित करनी हो या बनानी हो तो सर्वप्रथम इनको अंगुलियों के मान में परिवर्तित करेंगे।

चूँकि 1 हाथ = 24 अंगुल, अतएव

लम्बाई (5 हाथ x 24) + 5 अंगुल = 125 अंगुल।

चौड़ाई (5 हाथ x 24) + 5 अंगुल = 125 अंगुल।

ऊंचाई (6 हाथ x 24) + 1 अंगुल = 145 अंगुल

इसी गणितीय नियम के अनुसार अग्रिम वर्ण्य विषय में क्षेत्रफल, आय आदि का आनयन किया जायेगा जो कि वास्तु के फल जानने में सहयोगी होगा –

6.3.1 क्षेत्रफल – आय –नक्षत्र – नक्षत्रगण- नक्षत्रदिशा विचार

1) चूँकि क्षेत्रफल का आशय आप को मकान के लम्बाई – चौड़ाई के अनुसार समझना चाहिए – जैसे –

   लम्बाई × चौड़ाई = क्षेत्रफल

अतएव 125 अंगुल × 125 अंगुल = 15625 वर्गफुट, इस प्रकार क्षेत्रफल 15625 वर्गफुट हुआ।

2) आय – वास्तु के सम्पूर्ण क्षेत्रफल में 8 का भाग देने से जो शेष आवे वह प्रथम क्रम से आय होता है पूर्व उदाहरण क्षेत्रफल 15625 वर्गफुट है, अत: 15625 / 8 = 1953 लब्धि आई और शेष 1 बचा, अत: प्रथम ध्वज आय है और यह शुभ है।

3) नक्षत्र – वास्तु के कुल क्षेत्रफल में 27 का भाग देने से शेष राशि नक्षत्र की मूल राशि होती है, मुलराशि को 8 से गुनाकर 27 का भाग देने पर जो शेष आवे वही अंक नक्षत्र संख्या होगी। पूर्व उदाहरण के अनुसार क्षेत्रफल 15625

वर्गफुट है। अत: 15625 / 27 = 578 लब्धि आई, तथा शेष 19 बचा, अत: नक्षत्र की मूल राशि 19 हुआ। अब 19 × 8 = 152 लब्ध आया, अब इसमें 27 का भाग दिया, 152 /27 = 5 लब्धि आया तथा शेष 17 बचा यही नक्षत्र अंक है, अत: 17 वां नक्षत्र अनुराधा नक्षत्र हुआ।

4) नक्षत्रगण – अनुराधा नक्षत्र का देवगण है अत: भवन का भी देवगण होगा जो कि शुभ है।

5) नक्षत्र दिशा – अनुराधा नक्षत्र पर चन्द्र पश्चिम दिशा में रहते हैं अत:अनुराधा नक्षत्र की दिशा भी पश्चिम दिशा होगी।

6.3.2 नक्षत्र वैर, व्यय, तारा, नाड़ी ,राशि, राशिस्वामी विचार

6) नक्षत्र वैर – अनुराधा नक्षत्र का किसी नक्षत्र से वैर नहीं है।

7) व्यय – नक्षत्र की अंक संख्या में 8 का भाग देने पर जो शेष अंक रहता है वही व्यय की संख्या होती है ,पूर्व उदाहरण में नक्षत्र का अंक 17 है इसमें 8 का भाग दिया, 17 / 8 = 2 लब्धि आया तथा शेष 1 बचा यह व्यय का अंक है।

8) तारा – गृह स्वामी के नक्षत्र से गृह तक गिने, जो अंक आवे उसमें 9 से भाग देने पर जो शेष आवे वह इस वास्तु का तारा होगा। इस बात को आप को इस प्रकार समझना चाहिए –

वास्तु अजित कुमार की है अत: वे ही इस वास्तु के गृहस्वामी हुए। चूँकि इनका जन्म नक्षत्र उत्तराषाढ़ा है अत: उत्तराषाढ़ा से अनुराधा नक्षत्र तक गिनने पर नक्षत्र क्रम 25 वां हुआ, इस नक्षत्र क्रम में 9 का भाग देने से –

25 / 9 = 2 लब्धि आई तथा शेष 7 बचा यही अंक तारा का अंक है। ताराओं में 4, 6, 9 शुभ है।

1, 2, 8 मध्यम फल समझना चाहिए, तथा 3, 5, 7 को अशुभ समझना चाहिए।

9) नाड़ी – गृहपति अजित कुमार के उतराषाढा जन्म नक्षत्र की नाड़ी अन्त्य हुआ तथा वास्तु के अनुराधा नक्षत्र की नाड़ी मध्य है, तथा इन दोनों की नाड़ी में प्रीति है अत: ये शुभ है।

10) राशि – नक्षत्र के क्रमांक में 60 का गुना करके 135 का भाग देने से जो लब्धि आवे उसमें एक और जोड़ दें वही राशि की संख्या होगी। जैसे – उक्त उदाहरण में नक्षत्र का क्रमांक 17 है।

अत: 17 × 60 = 1020 गुणनफल आया

अब नियमानुसार 1020 / 135 = 7 लब्धि आया, अत: इसमें 1 जोड़ा ,

7 + 1 = 8 यह राशि का क्रमांक है, अतएव 8 वीं राशि हुई

11) राशिस्वामी – इस उदाहरण में भवन की राशि वृश्चिक हुआ, तथा इस राशि के स्वामी मंगल है, गृह स्वामी की राशि धनु है ,एवं इस राशि के स्वामी गुरु हैं। चूँकि बृहस्पति और मंगल में मित्रता है अत; यह भी शुभ हुआ।

6.3.3 गृह स्वामी का नामाद्यक्षर, अंशक, लग्न ,तिथि ,वार ,करण, योग आदि विचार

12) गृहस्वामी का नामाद्यक्षर – क्षेत्रफल में 4 का गुणा कर 16 का भाग दें। शेष अंक ध्रुव आदि से प्रारम्भ करके गृह का होगा। अब इसको इस प्रकार समझना चाहिए उदाहरन में क्षेत्रफल 15625 वर्गफुट है, इसमें 4 का गुणा करके तथा लब्धि में 16 का भाग देने से जो शेष आएगा वही गृह का नाम होगा।

जैसे - 15625 x 4 = 62500 गुणनफल आया, इसमें 16 का भाग दिया ,

62500 / 16 = 3906 लब्धि आई तथा शेष 4 बचा, यही गृह का नामाद्याक्षर होगा, चौथा गृह नन्द है। यह नन्द वास्तु का नाम है तथा यह शुभ भी है।

13) अंशक – नक्षत्र की मूल राशि में व्यय अंक तथा नामाद्यक्षर को आपस में जोड़े। उसमें 3 का भाग दें तो शेष राशि अंशक होगा। पूर्वोक्त उदाहरण में नक्षत्र की मूल राशि अंक 19 है । व्यय अंक 1 है, एवं गृह का नामाद्यक्षर 4 है। अत: 19 + 1 + 4 = 24 योगफल , इस योगफल में 3 का भाग दें।

24 / 3 = 8 लब्धि आया तथा शेष 0 रहा अत: यह राज अंशक होगा, यह शुभ है।

14) लग्न – (आय अंक + नक्षत्र अंक + व्यय अंक + तारा अंक + अंशक अंक) इनके योग में 12 का भाग देने पर जो शेष आयेगा वही अंक लग्न होगा।

उदाहरण के अनुसार आय अंक + नक्षत्र अंक +व्यय अंक +तारा अंक +अंशक अंक इन सबको जोड़ा

1 + 17 + 1 +1 + 3 =23

योगफल 23 में 12 का भाग दिया

23 / 12 = 1 लब्धि आया तथा शेष 11 रहा यही अंक लग्न का अंक होगा।

अत: 11 वां लग्न कुम्भ हुआ।

15) तिथि – लग्न संख्या में 15 का भाग दें शेष अंक त्तिथि होगी इसको नन्दा को प्रथम मानकर गणना करनी चाहिए ।यहाँ पर उदाहरण में लग्न संख्या 23 है, इसमें 15 का भाग देने पर 23 / 15 = 1 लब्धि आई तथा शेष बचा 8 यह तिथि का अंक होगा, अर्थात आठवीं तिथि जया है।

अत: यह शुभ है।

16) वार – क्षेत्रफल में 11 का गुणाकर 7 का भाग देने पर जो शेष आएगा वही अंक वार

संख्या होगी इसमें वार की गणना रविवार को 1 मानकर करना चाहिए।

उदाहरन में क्षेत्रफल 15625 है इसमें 11 का गुणा किया ,

15625 × 11 = 171875 गुणनफल आया ,इस गुणनफल में 7 का भाग दिया

171875 / 7 = 24553 लब्धि आई तथा शेष 4 बचा यह वार का अंक है ,

अत: चौथा वार रविवार से गिनने पर बुधवार हुआ यह शुभ है।

17) करण – क्षेत्रफल को 9 से गुना कर 11 से भाग देने से जो शेष आवे वही करण होता है।

उदाहरण में क्षेत्रफल 15625 है इसमें 9 का गुना किया ,

15625 × 9 = 140625 गुणनफल आया इसमें 11 का भाग दिया ,

140625 / 11 = 12784 लब्धि आया और शेष 1 बचा यह करण का अंक है

अत: प्रथम करन बव है ।

18) योग – क्षेत्रफल में 13 का गुणा करके 27 से भाग देने पर जो शेष आवें वही अंक योग होता है।

उदाहरण में क्षेत्रफल 15625 है इसमें 13 से गुणा किया ,

15625 × 13 = 203125 गुणनफल प्राप्त हुआ इस गुणनफल में 27 का भाग दिया ,

203125 / 27 = 7523 लब्ध आया तथा शेष 4 बचा यही योग का अंक है अत: चौथा योग सौभाग्य है जो की शुभ है।

6.3.4 वर्ग एवं तत्त्व वास्तु में ज्योतिषीय विचार

19) वर्ग – क्षेत्रफल में ऊंचाई जोडकर उसमें 8 का भाग दें जो शेष आएगा वही वर्ग होगा। यहाँ पर क्षेत्रफल 15625 है तथा ऊंचाई 145 है इन दोनों को जोड़ने से

15625 + 145 = 15770 योगफल हुआ, इस योगफल में 8 का भाग देने पर ,

15770 / 8 = 1971 लब्ध आया तथा शेष 2 आया, सम संख्या शेष आने पर शुभ है 2 सम संख्या है अत: शुभ हुआ।

20) तत्व – क्षेत्रफल में 8 का गुणा कर 60 का भाग दें तथा जो शेषफल आवे उसमें भी 5 का भाग देने पर जो शेष बचे उसे तत्व कहते हैं।

उदाहरण के अनुसार क्षेत्रफल 15625 है इसमें 8 का गुना किया, 15625 × 8 = 125000 गुणनफल आया इस गुणनफल में 60 का भाग दिया, 125000 / 60 = 2083 लब्ध आया तथा 20 शेष बचा इस शेशांक में 5 का भग दिया, 20 / 5 = 4 लब्ध आया तथा शेष 0 बचा अत: भवन का तत्व आकाश हुआ इस प्रकार आप ज्योतिष और वास्तु का सम्बन्ध समझ सकते हैं कि कितना महत्वपूर्ण है।

चूँकि इसके अनुसार आप वास्तु का आसानी से आयु निकाल सकते हैं।आयु निर्धारण करने के लिए शास्त्रों में अनेक विधियां उल्लिखित है इसमें सर्वप्रथम (मिट्टी की वास्तु की आयु निकलने के लिए वास्तु का क्षेत्रफल निकालकर उसमें 8 से गुणा कर के गुणनफल में 60 का भाग देने पर जो शेष बचे वही वास्तु की आयु होती है। उदाहरण - वास्तु की लम्बाई 5 हाथ

5 अंगुल है तथा चौड़ाई 5 हाथ 5 अंगुल है अत:

लम्बाई × चौड़ाई = क्षेत्रफल

5 हाथ 5 अंगुल लम्बाई × 5 हाथ 5 अंगुल चौड़ाई

125 अंगुल × 125 अंगुल = 15625 वर्गफुट, इस उदाहरण में क्षेत्रफल 15625 वर्गफुट है इसमें 8 से गुणा किया।

15625 × 8 = 125000 गुणनफल, इसमें 60 का भाग दिया

125000 / 60 = 2080 लब्ध आया और शेष 20 बचा यही वास्तु की आयु है, अर्थात वास्तु की आयु 20 वर्ष निर्धारित किया जा सकता है।

अर्थात मिट्टी की वास्तुआयु के 10 गुना चुने के वास्तु का आयु होती है इसके अनुसार यहां पर चुने के वास्तु की आयु 200 सौ वर्ष समझना चाहिए।

मिट्टी के घर के आयु के 30 गुना चुने और पत्थर से बनी वास्तु का आयु समझना चाहिए, इसलिए यहां पर इस वास्तु की आयु 600 सौ वर्ष निर्धारित किया गया है।

मिट्टी की वास्तु की आयु के 90 गुना सीसे और पत्थर से बने वास्तु की आयु होती है इसलिए यहां पर इस गृह की आयु 1800 सौ वर्ष की होगी ऐसा समझना चाहिए।

धातु से बनाये गये गृह की आयु मिट्टी की वास्तु की आयु से 370 गुना होता है अत: इसकी आयु 7400 सौ वर्ष समझना चाहिए।

वर्तमान समय में लोहा – सीमेन्ट – रेत- पत्थर से भवन आदि निर्माण किये जाते हैं, इसकी आयु चुने के मकान के बराबर ही आयु जानना चाहिए।

इस पाठ में आयु और आय दोनों विषयों को सामान्यतया बताने का प्रयास किया गया है जिससे को आप ज्योतिष और वास्तु के अन्त: सम्बन्ध से परिचित हों चूँकि कुल आय 8 प्रकार के होते हैं,अब यहां पर आय को समझते हैं –

क्रम संख्या	आय का नाम	दिशा	फल
1 पहला	ध्वज	पूर्व	शुभ
2 दूसरा	धूम्र	आग्नेय	अशुभ
3 तीसरा	सिंह	दक्षिण	शुभ
4 चौथा	श्वान	नैॠत्य	अशुभ
5 पांचवां	वृष	पश्चिम	शुभ
6 छठवां	खर	वायव्य	अशुभ
7 सातवां	गज	उत्तर	शुभ
8 आठवां	ध्वांक्ष	ईशान	अशुभ

चारों ओर नीव की भूमि (अर्थात दिवार करने की भूमि) को छोड़कर मध्य में जो भूमि है उसकी लम्बाई – चौड़ाई गृहस्वामी के हाथ से नापकर उसका आपस में गुणाकर क्षेत्रफल निकालना चाहिए, इसमें आठ का भाग देने पर जो शेष आवे उसे ध्वज आदि से आय समझना चाहिए। इसकी उपयोगिता मुख्यरूप से द्वार निर्धारण में किया जाता है

साथ ही वास्तु स्वामी के आय का भी विचार किया जाता है चूँकि स्थान के अनुसार आय का विभाजन इस प्रकार समझना चाहिए, ध्वज –गज –सिंह ये तीनों आय उत्तम स्थानों में देना चाहिए । ध्वज आय सर्वत्र देना चाहिए, गज – सिंह –तथा वृष आय गाँव – किला आदि स्थानों में देना चाहिए ,वापी –कूप –तालाब शैया में गज आय श्रेष्ठ है, सिंहासन आदि आशन में आय श्रेष्ठ है, भोजनपात्र में वृष आय, तथा छत्र –तोरण आदि में ध्वज आय श्रेष्ठ है, नगर – प्रसाद – देवालय सब प्रकार के घर में वृष, गज एवं सिंह ये तीनों आय दे सकते हैं । स्वान आय म्लेक्ष्छों के घरों में तथा ध्वांक्ष आय तपस्वियों के उपाश्रम ,मठ ,कुटी आदि में देना चाहिए । भोजन बनाने के कक्ष में तथा अग्नि से आजीविका करने वाले, रसोईया, लोहार आदि के घर में धूम्र आय देना उपयुक्त होता है । ब्राह्मण के घर के लिए ध्वज आय, क्षत्रिय के घर के लिए सिंह आय, वैश्य के घर के लिए वृष आय शुद्र तथा म्लेक्ष्छों के घर में स्वान आय तथा मुनि –साधू –सन्यासी के आश्रम में ध्वाक्ष आय ग्रहण करना चाहिए ।

अब यहां पर आय के अनुसार गृह स्वामी के लिए कैसा रहेगा उसका गृह इस बात को समझते हैं, निम्नलिखित सरणी के अनुसार मनुष्य के नाम का प्रथम अक्षर जिस अंक में हो उस अंक में मनुष्य के नाम का प्रथम अक्षर की संख्या का गुनाकर 8 का भाग दे शेष जो आएगा उसको ध्वज आदि आय समझना चाहिए ।

14	27	2	12	15	8	4	3	5	6 9
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ अं
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प फ
ब	भ	म	य	र	ल	च	श	ष	स ह

उदाहरण – शीतल चन्द्र के लिए श के खाने में 3 अंक प्राप्त हो रहा है, शीतल चन्द्र की नाम राशि का प्रथम अक्षर संख्या 5 है इनका आपस में गुना करने पर 3 x 5 = 15 गुणनफल आया तथा शेष 7 रहा यही ध्वज आदि क्रम से 7 वीं आय गज आय होगी यह आय शीतल चन्द्र की है । अब यहां मुख्य बात यह है कि वास्तु की आय के साथ मनुष्य के आय को मिला कर देखना चाहिए कि वह शुभ है या अशुभ है इसलिए अब यहाँ शीतलचन्द्र के भवन की आय का विचार करना आवश्यक है ।

इनके मकान की लम्बाई है 9 हाथ और चौड़ाई है 3 हाथ, नियमानुसार, लम्बाई x चौड़ाई = क्षेत्रफल 9 हाथ × 3 हाथ = 27 वर्ग हाथ क्षेत्रफल हुआ, इस क्षेत्रफल में 8 का भाग देने से शेष 3 रहा अर्थात तीसरी आय सिंह है । यह आय गृहपति के आय का भक्ष्य है अत: मृत्यु कारक होने के कारण अशुभ है । अब यही मकान यदि एक- एक अंगुल अधिक कर दिया जाय तो शीतल चन्द्र के मकान की आय का आकलन इस प्रकार करना चाहिए –

शीतल चन्द्र के मकान की लम्बाई = 9 हाथ 1 अंगुल

शीतल चन्द्र के मकान की चौड़ाई = 3 हाथ 1 अंगुल, लम्बाई x चौड़ाई = क्षेत्रफल

(9 हाथ + 1 अंगुल) x (3 हाथ + 1 अंगुल)= 217 x 73 = 15841 गुणनफल आया, इसमें 8 का भाग देने पर लब्धि 1980 आया तथा शेष 1 बचा यह शीतल चन्द्र के मकान का प्रथम आय ध्वज आय हुआ यह आय भक्ष्य नहीं है शुभ तथा श्रेष्ठ फलदायक है इसी तरह सब जगह समझना चाहिए।

6.4 सारांश

चूँकि वास्तुशास्त्र और ज्योतिष का आरम्भ काल से ही अनन्य सम्बन्ध रहा है एवं वैदिक साहित्य का अभिन्न अंग होने के साथ अथर्व वेद के उपवेद के रूप में भी (स्थापत्य वेद) को जाना जाता है। एवं वेद के षडंगों में ज्योतिष का भी महत्वपूर्ण स्थान है, इन दोनों विषयों की विश्वसनीयता प्रचुर मात्रा में समाज में ब्याप्त है। और भी विशेष बात यह है कि वास्तुशास्त्र और ज्योतिष के अन्त: सम्बन्ध से जिसमें गृह, प्रसाद, महल, देवालय, उद्यान, वापी विविध मण्डप नगर इत्यादि के निर्माण का इस पाठ में चर्चा किया गया है।चूँकि गृहारम्भ काल से ही ज्योतिष के अनुसार किस मास में घर बनाना आरम्भ करेंगे तो क्या शुभाशुभ फल होगा इत्यादि अनेक विषयों का सम्बन्ध यहां पर आपको देखने को मिलेगा, ग्रामवास, काकिणी विचार, मण्डलेश एवं मुख्य द्वार आदि विचार गृह प्रवेश में लग्नफल एवं कलश चक्र विचार आदि, क्षेत्रफल, नक्षत्र दिशा, नक्षत्र वैर, व्यय, तारा, नाडी, राशि, राशिस्वामी, गृह का नामाद्याक्षर, अंशक, लग्न, तिथि,वार, करण, योग आदि विचार, वर्ग एवं तत्व आदि वास्तु में ज्योतिषीय विषयों के अन्त: सम्बन्ध को समझाते हुए समाज को अवगत करायेंगे तथा मुझे आशा है कि यह पाठ आप सभी को सनातन परम्परा एवं ज्ञान विज्ञान की धारा सहित वास्तु एवं ज्योतिष का महत्वपूर्ण हिस्सा होगा जिससे कि आप मूल तथ्यों को समझ कर दिशा निर्देश करेंगे।

6.5 शब्दावली

चिरकाल	=	पुराने समय से
मण्डलेश	=	का सम्बन्ध उस भूमि से है जहां पर आप घर बनाने जा रहें हैं।
वृषवास्तु चक्र	=	सूर्य के नक्षत्र से 7 नक्षत्र अशुभ ,8 से 18 नक्षत्र शुभ उसके बाद 19 से 28 नक्षत्र तक अशुभ होता है जिसे वृषवास्तु चक्र कहते हैं।
वर्ग	=	अ – क –च – ट –त – प –य –श
स्वामी	=	गरुड़, विलाव, सिंह, स्वान, सर्प, मूषक, मृग और मेष
काकिणी	=	अंक विशेष (शेशांक)
पश्चिमाभिमुखी	=	पश्चिम की ओर मुख
द्वार	=	दरवाजा
पूर्वाभिमुख	=	पूर्व की ओर मुख वाला
अवर्गादि	=	8 वर्ग
गृह स्वामी	=	घर का स्वामी
द्युत	=	जुआ
भूस्वामी	=	जमीन का मालिक

ब्राह्मण वर्ण राशि	=	कर्क- वृश्चिक – मीन
क्षत्रिय वर्ण राशि	=	मेष – सिंह – धनु
वैश्य वर्ण राशि	=	वृष – कन्या – मकर
वाम सूर्य	=	1, 8, 5, 2, 11वें भाव में सूर्य के रहने पर पुर्वादि दिशा के गृह में वाम सूर्य कहे जाते हैं।

6.6 उपयोगी पुस्तकें

1. गृहवास्तुप्रदीप, डॉ. (श्री मती) शैलजा पाण्डेय, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
2. वृहद्वास्तुमाला, सम्पादक – डॉ.ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, डॉ. रवि शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन
3. वस्तुसारसंग्रह, लेखक – आचर्य श्री कमलाकान्त शुक्ल, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी
4. भवनभास्कर, लेखक – राजेन्द्र कुमार धवन, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी संबत 2057, गीता प्रकाशन गोरखपुर
5. वास्तुचिन्तामणि, सम्पादक – नरेन्द्र कुमार बड़जात्या, श्री प्रज्ञाश्रमण दिगम्बर जैन संस्कृति न्यास, ज्योति निलय गरुड़ खाम्ब चौक इतवारी नागपुर
6. शिल्पदीपक, सम्पादक – डॉ. श्री कृष्ण जुगनु, चौखम्भा संस्कृत सीरीज आफिस वाराणसी
7. देव शिल्प (मन्दिर वास्तु एवं स्थापत्य), रचयिता –सिधान्त रत्नाकर, सम्पादक – नरेन्द्र कुमार बडजात्या छिंदवाड़ा, वर्ष –सिद्धान्त क्षेत्र नैनागिरी 15 /07 / 2000

6.7 बोध प्रश्न

1. वास्तु और ज्योतिष का अन्त: सम्बन्ध प्रस्तुत कीजिए ?
2. गृहारम्भ में मास एवं राशिफल को लिखिए ?
3. ज्योतिष और वास्तु के अनुसार ग्राम वास विचार लिखिए ?
4. भवन में मुख्यद्वार विचार कीजिए ?
5. वर्ग और तत्व का विचार करके लिखिए ?
6. क्षेत्रफल, आय, नक्षत्रगण, तथा नक्षत्र दिशा का विचार कीजिए ?

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY